5. अफ़ग़ानिस्तान में हिन्दू/मोहयाल राज

आवरण में रखा गया इतिहास

सातवीं शताब्दी में अरब देश में एक नए धर्म, इस्लाम, का प्रादुर्भाव हुआ. शीघ्र ही ईराक , सीरिया , मिस्र , ईरान , त्रिपोल और उत्तर-पश्चिम अफ्रीका तक के सब देश इस्लाम धर्मावलम्बी अरबों ने सुगमता और तीव्रता से जीत लिए. महान ईरानी साम्राज्य का तेज़ी से पतन हो जाने पर (640 ई) खिलाफत की पूर्वी सीमा "अल हिन्द" (भारत) की पश्चिमी सीमा से मिल गयी. उस समय अफ़ग़ानिस्तान में राजनीतिक स्थिति क्या थी?

जब अरबों ने भारत की पश्चिमी सीमा में घुस पैठ आरम्भ की उस समय दो हिन्दू राजे दक्षिणी अफ़ग़ानिस्तान पर शासन कर रहे थे. दक्षिण-पश्चिम में स्थित ज़ाबुलिस्तान का क्षत्रीय शासक "रुतबल" था. उसकी राजधानी "बुस्त" थी जो अब नष्ट हो चुकी है. उसके राज्य की सीमा ईरान तक थी. एक बौद्ध राजवंश (जिसको अल बैरूनी ने तुर्क हिन्दू शाही कहा है) का शासन दक्षिण-पूर्वी अफगानिस्तान पर था. उसकी राजधानी काबुल थी. दोनों राज्यों के आपसी घनिष्ट संबंध थे और मुस्लिम इतिहासकार इस हिन्दुकुश के पूरे दक्षिणी क्षेत्र को प्रायः काबुल राज्य ही कहते थे.

अरब, भारत (अफ़ग़ानिस्तान) और सिंध (हिन्द व् सिंध) पर धावे करने लगे. अफ़ग़ानिस्तान में हिन्दू शासकों ने तीन सौ से अधिक वर्षों तक इस्लामी झंझवात को भारत की मुख्य भूमि पर आने से रोक कर रखा. इसमें से आधी अवधि - लग भग 840 से1000 ई तक - मोहयाल ब्राह्मण (काबुल शाही) दर्रा खैबर के दोनों ओर राज करते हुए प्राचीर के समान प्रहरी बने रहे. परन्तु उनका इतिहास बताने से पहले ज़ाबुल के क्षेत्रीय "रुतबिल" राजवंश का उल्लेख करना आवश्यक है. "रुतबिल " राजा का नाम नहीं उनकी वंशागत उपाधि थी .

जब अब्दुल मलिक ने खिलाफत की बाग़ डोर संभाली (684-705) तो उस ने हज्जाज इब्न यूसुफ़ को ईराक का गवर्नर बना दिया (694-705). "698 ई में हज्जाज ने उबैदुल्ला इब्न बाकरा को आदेश दिए कि वह रुतबल के देश पर आक्रमण करे और वापिस न लौटे जब तक वह सारे देश को पराभूत न कर ले या फिर नष्ट न कर दे. इस आज्ञा के अनुसार उबैदुल्ला ने वहां आक्रमण किया. बड़ी निपुणता से इस हिन्दू राजा ने अपनी सेना को रास्ते से हटा लिया और आक्रमणकारियों को अवरुद्ध आगे बढ़ने दिया. जब वे काफी आगे तक चले गए तो हिन्दू सेना ने पीछे से तंग रास्ते और दर्रे रोक लिए. इसके परिणाम स्वरुप आपूर्ति रुक जाने से मुस्लिम सेना की अकाल से नष्ट होने की स्थिति आ गई और पीछे हटना भी असंभव हो गया. उबैदुल्ला को जब अपनी अविवेकी नेतृत्व की भूल समझ आई तो उस ने अपनी और अपने अनुयाइयों की मुक्ति के लिए सात लाख दरहम निष्कृति धन के रूप में देना स्वीकार कर लिया." उस को यह भी लिखित प्रतिज्ञा करनी पड़ी की वह फिर कभी भी इस क्षेत्र

पर आक्रमण नहीं करेगा. निर्धारित की गई फिरौती का धन रुतबल के प्रतिनिधियों के पास जमा करने पर सब को निर्विघ्न लौटने की अनुमति दी गई. उबैदुल्ला के बहुत से सैनिक भूख और प्यास से मर गए. उनकी यह दुर्दशा देख कर उस दुःख से उबैदुल्ला का भी निधन हो गया. **अरब सेना की यह पहली पराजय थी. इस के पश्चात अरबों ने रुतबल से युद्ध करने का साहस नहीं किया.**

इस शर्मनाक पराजय के पश्चात इस्लाम की प्रतिष्ठा के लिए कुछ प्रतिक्रिया आवश्यक थी. हज्जाज ने मुहम्मद इब्न अष्ट के पुत्र अब्दुर्रहमान को चालीस हज़ार की हथियारों से सुसज्जित "भव्य सेना" के साथ रुतबल के राज्य क्षेत्र पर आक्रमण करने के लिए भेजा. 700 ई के लगभग वे ज़ाबुलिस्तान में प्रवेश तो कर सका परन्तु प्रचुर लूटमार करके भूमि पर अधिकार दृढ करने के बजाए वे सीस्तान लौट आया और वहां से हज्जाज को अपनी इस सफलता का समाचार भेजा. हज्जाज ने विधर्मियों (हिन्दुओं) के विरुद्ध "जिहाद" से विमुख होने के लिए उसकी घोर भर्तसना की और धमकी दी कि यदि उस वर्ष के अंत तक उसने अपने निर्धारित कर्तव्य को पूरा न किया तो उसको सेनानायक के पद से हटा दिया जाएगा.

रुतबल की सेना से युद्ध में टक्कर लेने का साहस उस में बिल्कुल नहीं था. अब्दुर्रहमान की सेना ने अपने ही शासक (ख़लीफ़ा)के विरुद्ध विद्रोह करनेका निश्चय किया. अपनी स्थिति दृढ करने के लिए अब्दुर्रहमान ने अपने धर्मविरोधी (रुतबल) से एक संधि कर ली. इस के अनुसार यदि अब्दुर्रहमान अपने अभियान में सफल रहा तो रुतबल से किसी प्रकार का कर नहीं मांगा जाएगा परन्तु खलीफा के विरुद्ध इस संघर्ष में यदि वह विफल रहा तो रुतबल को उसे शरण प्रदान करनी पड़ेगी. जब बसरा और कूफा के अरब विद्रोहियों के साथ मिल गए, तो पहले तो उम्मयाद (खलीफा) का सिंहासन डोलता दिखाई देने लगा परन्तु अंततः, 704 ई में, अब्दुर्रहमान और उस के सहयोगी बुरी तरह हार गए और सीस्तान पर पुनः खलीफा का प्रभुत्व हो गया. इन लम्बी झड़पों का विवरण यहां नहीं दे रहे हैं. निरंतर राजनीतिक हस्ताक्षेप से रुतबल ने इस्लाम के विस्तार को रोक दिया था और अगले डेढ़ सौ वर्ष तक अरब इस क्षेत्र में स्थाई रूप से लाभान्वित नहीं हो सके. ज़ाबुल और काबुल के दोनों हिन्दू राज्य अपनी संप्रभुता बनाये रहे.

धीरे धीरे अरबों की शक्ति घटने लगी. पूर्व में जो लोग इस्लाम धर्म के अनुयायी हो गए थे, वह ईरान और कोह हिन्दू कुश के बीच, खुरासान और मध्य एशिया अदि में जहां पहले अरब खलीफा का प्रभुत्व था, वहां अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित करने लगे. इनमें से एक सीस्तान के "सफार" राजवंश के याकूब नाम के शासक ने संधि करने के बहाने से 870 में हिंदू राजा रुतबल को छल द्वारा मार डाला. इस प्रकार दक्षिण-पश्चिमी अफ़ग़ानिस्तान भारत के पभुत्व से निकल गया. तब तक काबुल में, बौद्ध राजा को हटा कर, वहां ब्राह्मण वंश का शासन आरम्भ हो चुका था.

इस्लाम की पराजय का यह विवरण विदेशी शासकों द्वारा आवरण में रखा गया और आपको इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में नहीं मिलेगा.